Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 9, June-2019, ISSN 2230-7540

राजनीति में महिला सहभागिताः एक विश्लेषण

Vinod Kumar Garg[1]* Manroop Singh Meena[2]

[1] Research Scholar, Department of Political Science, Maharaja Surajmal Brij University, Bharatpur, Rajasthan

[2] Research Director, Ex. Principal, Department of Political Science, Maharaja Surajmal Brij University, Bharatpur, Rajasthan

सारांश – ***यत्रा नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्रा देवता। भारतीय संस्कृति में नारी सदा ही शक्ति का प्रतीक मानी जाती रही है। हमारे दृषियों की मान्यता थी, कि जहाँ नारी को समुचित सम्मान मिलता है, वहाँ देवता निवास करते हैं। वैदिक काल की दृषिकाएं हो, चाहे उन्नीसवीं एवं बीसवीं सदी की क्रान्तिकारी महिलाएं, ये नारी शक्ति के विभिन्न रूप है। परन्तु पिफर भी उसे समाज में पितृसत्तात्मकता के कारण पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त नहीं हुए। आज हम स्मृतियों से संविधान तक आ गए हैं, जहाँ कि प्रत्येक क्षेत्रा में पुरुषों के समान अधिकार प्रदान किए गए है। इन अधिकारों की क्रियान्विति के लिए महिलाओं को सशक्त करना आवश्यक है। सरकार द्वारा भी विभिन्न कार्यक्रमों एवं नीतियों के माध्यम से राजनीति में महिला सहभागिता बढ़ाने के प्रयास किए जा रहे है। महिलाओं में अपने राजनैतिक अधिकारों के प्रति जागरूकता व राजनैतिक सशक्तीकरण न केवल महिलाओं के विकास के लिए जरूरी है, बल्कि उनकी रचनात्मक क्षमता की सुलभता सामाजिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है और इसके बिना देश निरन्तर विकास के पथ पर प्रगति नहीं कर सकता। महिलाओं में राजनैतिक जागरूकता एवं सशक्तीकरण के लिए उन्हें शिक्षित करना आवश्यक है। शिक्षित होकर ही वे अपनी राजनीति में भागीदारी को बढ़ा पायेगी।***

मुख्य शब्दः- लोकतंत्रा, राजनीति, सहभागिता, महिला

----------X----------

वर्तमान में लोकतंत्रा शासन प्रणाली का श्रेष्ठतम उदाहरण है। इसका सार जनता की सहभागिता में निहित है। यह लोकतंत्रा महिला एवं पुरुष दोनों को उन्नति और विकास के समान अवसर प्रदान करती है। परन्तु विकास के विविध् चरणों में महिलाओं को उचित स्थान प्राप्त नहीं हुआ है, जिसकी वह हकदार है। इसमें कोई संदेह नही है कि आज महिलाओं ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी महत्वपूर्ण स्थिति को दर्ज कराया है परनतु अधिकांश क्षेत्रों में 33% अशिक्षित कोटा को प्राप्त करने के बावजूद भी महिलाओं की उपस्थिति नगण्य है बहुत ही आश्चर्य की बात है कि भारतीय संविधान ने महिला सशक्तिकरण को सुनिश्चित किया है परन्तु वास्तव में यह सशक्तिकरण केवल सतही स्तर पर है। विश्व की लगभग आधी आबादी में महिलाएं होने के बावजूद सत्ता के पायेदान पर महिलाओं की सहभागिता का प्रतिशत लगभग शून्य है। प्रस्तुत शोध्-पत्र में राजनीति में महिलाओं की भागीदारी से सम्बन्ध विभिन्न पक्षों पर जोर देने पर प्रयास किया गया है।

साहित्यावलोकन

गुप्ता आलोक कुमार भण्डारी आशाऋ महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी, 2001 में उल्लेखित है कि महिलाओं को घर की चार-दीवारी से बाहर निकालकर जब तक निर्णय निर्माण संस्थाओं में भागीदारी नहीं बनाया जायेगा तब तक राजनीति को स्वच्छ आधार प्रदान करना सम्भव नहीं होगा। जब तक देश की आधी मानव शक्ति का राजनीति और प्रशासन में प्रवेश नहीं होगा तब तक राजनीति को सुदृढ नहीं बनाया जा सकता।

Bavishakar B.S., Mathew George, Inclusion and Exclusion in Local Government L: Field Studies from Rural India 2009, राष्ट्रीय स्तर का शोध् है जो बारह राज्यों के लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण से सम्बन्धित है। यह शोध् स्थानीय स्तर पर महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी एवं सशक्तीकरण से सम्बन्धित है। इस शोध् के द्वारा किये गये क्षेत्रीय अध्ययन विविध् ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की

www.ignited.in

राजनीतिक जागरूकता एवं भागीदारी का सूक्ष्म अध्ययन करते हैं।

सिंघल विपिन कुमारः भारत में महिला सशक्तिकरण: समस्याएँ एवं चुनौतियों, 2017 भारत में महिला सशक्तिमान से जुड़े विविध् पक्षों का अध्ययन करती है। आनुभाविक अध्ययन के माध्यम से इसमें महिला विकास के समक्ष उपस्थित सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक समस्याओं एवं महत्वपूर्ण चुनौतियों का उल्लेख किया है। समाज के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है कि महिलाओं को भी विकास के विविध् स्तरों पर समान भागीदार बनाया जाये।

कुमारी अर्चना, भारत में महिलाओं का राजनीतिक नेतृत्वः विविध् आयाम, 2015 में लेखिका ने महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को सम्पूर्ण समाज के उत्थन के लिए आवश्यक माना है, जो कि वर्तमान सन्दर्भों की एक महत्वपूर्ण चुनौती है। महिला नेतृत्व को विकसित करने के लिए सरकार, स्वयंसेवी संस्थाओं एवं समाज को सशक्त प्रयास करने हों गे। साथ ही आवश्यक है कि महिलाएँ स्वयं अपने अधिकारों के प्रति जागरूक बने और आत्मविश्वास के साथ आगे आये।

महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता

राजनीतिक क्षेत्र में महिला सशक्तीकरण के लिए महिलाओं की राजनीति में सहभागिता को बढ़ाना आवश्यक है। महिलाओं की न्यून राजनीतिक सहभागिता विभिन्न अध्ययनों का विषय रही है क्योंकि राजनीति निर्णय निर्माण प्रक्रिया का महत्वपूर्ण क्षेत्रा है। जहाँ कि राजनेताओं द्वारा लिए गए निर्णय समाज को प्रभावित करते हैं। राजनीति में शक्ति निहित है, जो कि अन्य सामाजिक संस्थाओं (परिवार, शिक्षा आदि) पर विधि के द्वारा अपने निर्णयों को लागू करती है। राजनीतिक पद पर आसीन व्यक्ति के पास सत्ता केन्द्रित होती है, जो कि उसे समाज के लिए वैधानिक निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करती है।

विश्व स्तर पर महिलाओं की राजनीति में सहभागिता बहुत कम है। महिलाएं विश्व की आबादी का आधा भाग है, लेकिन राजनीतिक स्तर पर राष्ट्रीय संसद में उनकी सहभागिता पचास प्रतिशत भी नहीं है। इस तथ्य को संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा भी विभिन्न सम्मेलनों में उठाया गया है तथा इस बात पर बल दिया गया कि महिला व पुरुष का राजनीति में प्रतिनिधित्व समान अनुपात में होना चाहिए।

व्यक्ति की राजनीतिक सक्रियता की प्रेरणा क्या है? किसी देश में राजनीतिक प्रवेश की प्रथम सीढ़ी केवल राजनीतिक दल की सदस्यता प्राप्त करना ही नहीं है वरन् महिला/ व्यक्ति के राजनीति में प्रवेश के लिए प्राथमिक स्तर पर महिलाम में राजनीतिक महत्वकांक्षा का होना जरूरी है। द्वितीय, राजनीतिक दल द्वारा समर्थन प्राप्त करना, तृतीय प्रतिनिधि के रूप में जनमत का समर्थन तथा चतुर्थ स्तर पर महिलाएं राष्ट्रीय/स्थानीय विधायिकाओं में प्रवेश करती है। नोरिस ने महिलाओं की राजनीतिक सक्रियता का मॉडल दिया है जिसे माटलैन्ड द्वारा परिष्कृत किया गया है। माटलैण्ड के अनुसार महिलाओं के राजनीति में प्रवेश के लिए राजनीतिक महत्वकांक्षा, संसाधन होने जरूरी है तथा राजनीतिक दल द्वारा चुनावों में उम्मीदवार के रूप समर्थन प्राप्त होना चाहिए तथा अंतिम चरण के रूप में मतदाता द्वारा मत देकर विधायक के रूप में चुना जाना चाहिए।

राजनीतिक सहभागिता में महिला-बाधक तत्व

राजनीतिक प्रक्रिया में महिला भागीदारी के मार्ग में अनेक बाधक तत्व विद्यमान है। ये बाधक तत्व एक नहीं वरन् अनेक है तथा इनमें राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक सभी प्रकार के तत्व है। विभिन्न बाधक तत्वों की एक संक्षिप्त विवेचना इस प्रकार है।

राजनीतिक तत्व

राजनीति क्षेत्र में अनेक ऐसे कारक है जो महिलाओं की भागीदारी को बाधित करते है। लगभग सभी देशों की राजनीति "पुरुष वाली और पुरुषों की कार्य शैली" (Male Dominated & Masculine style Politics) पर है, तथा उसमें महिलाओं की परिस्थितियों और सुविधाओं पर ध्यान नहीं दिया गया है। संसदीय बहसों के लम्बे घंटे तथा उसके उपरांत संसदीय समितियों कार्य, दलीय कार्य, निर्वाचन क्षेत्रा से जुड़ें विभिन्न कार्य तथा इन कार्यों से जुड़ी विभिन्न यात्राएँ यह सब कुछ इतना अधिक हो जाता है कि महिलाएँ-पत्नी, माँ और दादी की भूमिका निभाने या गृहस्थी से जुड़े समस्त कार्यों के साथ-साथ इनका तालमेल नहीं बिठा पाती। एक महिला को राजनीति में प्रवेश करने से पूर्व पारिवारिक सदस्यों से अनुमति लेनी होती है, जो सामान्यता एक सरल कार्य नहीं है।

नडिधा श्वेदोवा ने अपने एक लेख में इन कठिनाइयों का उल्लेख इस प्रकार किया है- "किसी महिला के लिए राजनीति में प्रवेश करने का विचार बना पाना बहुत अधिक कठिन है। एक बार वह अपना विचार बना ले, तब उसे इस संबंध् में अपने पति, बच्चों और परिवार को तैयार करना होता है। जब वह इन सब कठिनाइयों को पार कर दल के टिकट के लिये आवेदन करें, अब पुरुष प्रतियोगी जिसके विरूद्ध उसे लड़ना है,

उसके सम्बन्ध् में कई तरह की कहानियाँ प्रचारित प्रसारित करता है। इस सबके बाद जब उसका नाम दलीय नेताओं के सामने जाता है, तब वे उसे इस कारण उम्मीदवारी से वंचित कर देते हैं कि उन्हें सीट खो देने का डर रहता है। "अधिकांश अंशों में हम आज भी पुरुष प्रधान समाज में रह रहे हैं और पुरुष प्रधान समाज के राजनीतिक क्षेत्रा में महिलाओं की भागीदारी कम हो यह नितांत स्वाभाविक है।

सामाजिक - आर्थिक तत्व

राजनीति महिलाओं का कार्य क्षेत्रा नहीं है, सदियों से चला आ रहा यह विचार अब भी अनेक अंशों में बना हुआ है। परिणामतः महिलाएँ राजनीति की ओर उन्मुख नहीं होती और इस और जो उन्मुखी होती हैं उन्हें विधिक प्रकार से हतोत्साहित किया जाता है। इसके अतिरिक्त विश्व के अधिकांश देशों की राजनीति में धन की शक्ति बहुत अधिक बढ़ गई है। उम्मीदवारों को दल की ओर से बहुत थोड़े ही वित्तीय साधन दिये जाते हैं। शेष वित्तीय साधन तो उम्मीदवारों को स्वयं ही जुटाने होते हैं। विविध् क्षेत्रों से वित्तीय साधन जुटा लेने का कार्य पुरुष की तुलना में महिलायें ठीक प्रकार से नहीं कर पाती। यह बात उन्हें नुकसान की स्थिति में पहुँचा देती हैं। इन सबके अतिरिक्त अधिकांश देशों में राजनीति बहुत भ्रष्ट और विभिन्न दुष्टताओं से भरा खेल बन गया है। जैसे व्यक्तिगत लांछन, दुष्प्रचार, छलयोजित प्रसार, राजनीतिक जोड़-तोड़, बल प्रयोग और पफर्जी मतदान, चुनाव में विजय प्राप्त करने के गुण बन गये हैं। और इन सभी कार्यों में महिलाओं की शालीनता उन्हें इन कार्यों से विमुख करती है और वे नुकसान में रहती हैं।

राजनीतिक शिक्षा और सम्पर्क सुविधाओं में महिलाओं का पिछड़ापन

शिक्षा, राजनीतिक के संरचनात्मक तत्व का कार्य करती है और लगभग सभी देशों में महिलाये शिक्षा के सम्बन्ध् में पुरुषों से बहुत पीछे हैं। राजनीतिक शिक्षण, प्रशिक्षण में तो वे पुरुषों से बहुत पीछे हैं। परिणामस्वरूप वे चुनाव लड़ने का विचार नहीं कर पाती। यदि पाती हैं तो तो वे सपफल नही हो पाती। मजदूर संघों, व्यवसायिक संघो और अन्य दबाव समूहों से महिलाओं के नाम को आगे बढ़ाने की ओर प्रवृत्त नहीं होते। एक सोचनीय तथ्य यह है कि महिला संगठन भी सामान्यतया इस बात में रूचि नहीं लेते कि चुनावों में महिलाओं की उम्मीदवारी अधिक हो और जो महिला उम्मीदवार है, वे चुनाव में विजयी हो।

मनोवैज्ञानिक तत्व

राजनीति में महिलाओं की कम भागीदारी में मनोवैज्ञानिक तत्वों का भी योग है। राजनीति उनका कार्यक्षेत्र हो सकता है और वे चुनाव में विजयी हो सकती है। इस बात के सम्बन्ध् में सामान्यतया उनमें आत्मविश्वास का अभाव देखा गया है। अतः वे राजनीति की ओर उन्मुख नहीं होती। "राजनीति एक गन्दा खेल है" यह बात बहुप्रचारित है और बहुत कुछ अंशों में सत्य भी है। स्वाभाविक रूप से महिलाएं राजनीति में भाग लेने की बात सरलता से नहीं सोच पाती।

जनसंचार साध्नों की भूमिका

महिलाओं की कम भागीदारी के लिये समाचार पत्रा और टेलीविजन आदि जनसंचार के साधन अपनी लोकप्रियता बढ़ाने और अपने व्यवसायिक हितों के कारण नारी की देह उसके सौन्दर्य और आकर्षण को ही केंद्र बिन्दु बताये हुए हैं। इस बात को भुला दिया गया हैं कि नारी न केवल आकर्षक शरीर वरन ज्ञान ओर समझ से परिपूर्ण मस्तिष्क और रचनात्मक की धनी हैं।

कुछ अन्य तत्व भी हैं, साधारण बहुमत की पद्धति भी राजनीति में नारी की कम भागीदारी के लिए उत्तरदायी बताई जाती है। प्रमुख कारण तो स्वयं पुरुष और समाज के एक वर्ग की पुरुषवादी सोच और निहिता स्वार्थ ही हैं। विडम्बना यह हैं कि स्वयं नारी जाति का एक वर्ग पुरुषवादी सोच से ग्रस्त हैं।

राजनीति में महिला भागीदारी को बढ़ाने के लिये सुझाव महिलाओं का राजनीतिकरण महिलाओं का राजनीतिकरण महिला भागीदारी को बढ़ाने का निश्चित उपाय हैं। महिलाओं का राजनीतिकरण एक व्यापक धारणा हैं और इसके अंतर्गत अनेक बातें आती हैं। जैसे सूचना विचार और ज्ञान राजनीति का संरचनात्मक ढांचा है। अतः महिलाओं की सर्वांगीण जीवन और राजनीति के सम्बन्ध् में अधिकाधिक जानकारी देने, उनके विचार और ज्ञान को आगे बढ़ाने और राजनीति के प्रति उनमें अधिक से अधिक रूचि पैदा करने की प्रत्येक संभव चेष्टा की जानी चाहिए।

महिलाओं को अपनी सामाजिक समस्याओं जैसे प्रश्नों पर बातचीत के लिये अधिकाधिक प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। महिलाओं में आत्मविश्वास जागृत किया जाना चाहिए तथा इन्हें इस बात के लिये प्रेरित किया जाना चाहिए कि "यदि राजनीति एक गंदा खेल हैं" तो इस खेल की गन्दगी

को कम करने और इसमें ताजगी लाने के लिये इसमें प्रवेश करना चाहिये।

महिला संगठित हो, विशेषतया राजनीतिक रूप में संगठित हो -

राजनीति दलों के अन्दर और बाहर महिलाओं को संगठित होना चाहिये। महिलाएँ अधिक से अधिक संख्या में अपनी पसंद के राजनीति दल की सदस्यता प्राप्त करें और दल में स्वयं को प्रभावी बनाये। अधिकांश राजनीतिक दलों के नेतृत्व पद पर पुरुष आसीन हैं। उम्मीदवारों के चयन में अपने लिंग आधारित पूर्वाग्रह होते हैं। इन पूर्वाग्रहों के प्रभाव को कम करने के लिये महिलाओं को इस बात पर जोर देना चाहिये कि उम्मीदवारों के चयन के लिये स्पष्ट नियम हो तथा नेतृत्व के प्रति निष्ठा के बजाय दल के प्रति निष्ठा को अधिक महत्व दिया जावे। जब राजनीतिक खेल के लिये स्पष्ट होंगे तो अपने प्रतिनिधित्व को बढ़ाने के लिये महिलाएँ रणनीति विकसित कर सकती हैं। प्रत्येक राजनीतिक दल की महिला शखा को अधिक सशक्त बनाने के प्रयत्न किये जाने चाहिए। महिला शाखा सशक्त हो और अपने लिये अधिक प्रतिनिधित्व की मांग करें।

गैर सरकारी संगठनों, विशेषतया महिला संगठनों की भूमिका

राजनीति अपेक्षाकृत विशुद्धता और रचनात्मकता की दिशा में आगे बढ़े, इस दृष्टि से गैर सरकारी संगठनों के द्वारा राजनीति में महिलाओं की अधिक भागीदारी पर बल दिया जाना चाहिये। इस प्रसंग में सभी महिला संगठनों की जागरूकता और सक्रियता को बढ़ाते हुए राजनीतिक दलों पर इस बात के लिये दबाव डाला जाना चाहिये कि, वे अपने संगठनात्मक ढांचे में महिलाओं को प्रभावशाली भागीदारी दे और अधिक संख्या में उन्हें उम्मीदवार बनाये। ''महिला का वोट महिला के लिये'' यह स्थिति तो संभव और उचित नहीं हैं लेकिन जब कभी चुनाव मैदान में समान योग्यता वाले उम्मीदवार हो, तब महिला उम्मीदवार के पक्ष को पूरी शक्ति के साथ मजबूत किया जाना चाहिए।

राजनीतिक क्षेत्रा में सक्रिय महिलाओं और महिला संगठनों की स्थिति

जीवन के सभी क्षेत्रों में संचार माध्यमों की भूमिका महत्वपूर्ण हैं तथा अधिकाधिक महत्वपूर्ण होती जा रही हैं। राजनीतिक क्षेत्रा में सक्रिय महिला संगठनों के द्वारा जन संचार माध्यमों के साथ मित्राता की स्थिति बनायी जानी चाहिये। मीडिया नारी सौंदर्य को सामने लाने के साथ-साथ उसकी तेजस्विता, उफर्जा, शक्ति और रचनात्मकता को भी पूरी कलात्मकता के साथ सामने लाये। जो महिलाएँ राजनीति में हैं वे अपना कार्य उचित रूप में कर सके और अन्य महिलाएँ राजनीति में आने के लिये प्रोत्साहित हो। इसके लिये आवश्यक है कि पुरुष वर्ग की समस्त सोच में परिवर्तन हो और गृहस्थी के कार्य में पुरुष महिलाओं के साथ भागीदारी करे।

राजनीतिक प्रक्रिया में महिलाओं की सहभागिता कैसे बढ़े?

लिंग भेद एक सार्वभौमिक स्थिति हैं। निर्णय निर्माण प्रक्रिया में महिलाआंे को अपेक्षाकृत कम स्थान दिया जाता है। सहभागिता के दो आयाम हैं- परिणाम परक और गुणपरक कभी-कभी सहभागिता के परिणाम परक आयाम पर ही ध्यान दिया जाता है। उदाहरण के लिये महिलाएँ हैं तो समग्र जनसंख्या का आधा भाग, परन्तु निर्णय निर्माण के स्तर पर उनकी भूमिका अत्यंत न्यूनतम होती हैं। इसे तुरन्त परिवर्तित किये जाने की आवश्यकता हैं। सहभागिता का स्तर परिणामपरक न होकर गुणपरक भी होना चाहिए।

विकास प्रक्रिया (Development) में भी महिलाओं की सहभागिता बढ़ायी जानी चाहिए। महिलाओं के शिक्षा के अवसरों में बढ़ोत्तरी, उनके उन कार्यो को अपेक्षाकृत मान्यता जो वे बिना किसी पारिश्रमिक के करती हैं, चुनावी राजनीति में बेहतर प्रतिनिधित्व उनके अधिकारों की रक्षा के लिये बेहतर वैधानिक और राजनीतिक उपाय और निर्णय निर्माण प्रक्रिया में उनकी भूमिका कहीं अधिक सशक्त हो सकती हैं।

निष्कर्ष

महिलाओं की राजनीति में सहभागिता के सन्दर्भ में निष्कर्ष स्वरूप यह कहा जा सकता है कि सही मायने में लोकतंत्रा तभी हो सकता है, जब शासन और विकास कार्यक्रम दोनों में ही महिलाओं की सहभागिता हो। स्त्री और पुरुष दोनों की सहभागिता के बिना विकास कार्यक्रम के अभीष्ट लक्ष्य प्राप्त नहीं किये जा सकते हैं।

शासन में महिलाओं की सहभागिता ही यह सुनिश्चित कर सकती है कि, समाज को अपने सदस्यों की प्रतिभा का पूरा लाभ मिल रहा है। हाल ही के वर्षो में भारत जैसे देशों में महिलाएँ राजनीतिक संस्थाओं और नौकरियों में आरक्षण की मांग करती है और स्थानीय स्वशासन की संस्थाओं में महिलाओं को पहले ही 33 प्रतिशत आरक्षण दिया जा चुका है।

समस्त व्यवस्था और राजव्यवस्था में महिला अपने लिए समानता और न्यायपूर्ण स्थान अवश्य प्राप्त कर लेगी। इस दिशा में यात्रा प्रारम्भ हो गयी है। लक्ष्य अवश्य ही प्राप्त होगा, यात्रा की गति को बढ़ाने की आवश्यकता है। महिला जागृति और शक्तिशाली राजनीतिक प्रतिबद्धता यात्रा की गति को बढ़ाने में सहायक होंगे। और सही मायने में महिला की शासन में सहभागिता सुनिश्चित हो सकेगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. चतुर्वेदी, इनाक्षी एवं अग्रवाल, सीमा, महिला नेतृत्व एवं राजनीतिक सहभागिता, अविष्कार पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, जयपुर 2003 प्र. 15
2. राजस्थान पत्रिका, मार्च 8, 2016
3. योजना अप्रैल 2002
4. जोशी, आर.पी. एवं मंगलानी, रूपा (संपा.), पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं की सहभागिता, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2000, पृ. 80
5. पंवार, मीनाक्षी, नारी उत्पीड़न और कानून, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1990, पृ. 188
6. लोकतन्त्रा समीक्षा, चुनाव में महिलाओं की सहभागिता, संयुक्त अंक, जनवरी-दिसम्बर, 2004
7. www.Wikipedia.org/wiki/list of female Indian governments.
8. www.Rajassembly.nic.in/loksabha.html
9. नायक, अशोक एवं द्विवेदी, हर्षित, पंचायत राज में ग्रामीण नेतृत्व, महिलाएं एवं राजनीतिक सहभागिता, पोइन्टर पब्लिशर्स जयपुर, 213, पृ. 133
10. प्रकृति, वीमैनपफीचर सर्विस, बुलेटिन, अंक 44, 15 जनवरी 2001, पृ.2
11. सुशिला, पाटनी, वीमैन पॉलिटिकल एलीट सर्च पफॉर आइडेन्टिडी, जयपुर प्रिन्टवैल 1994
12. रंजन, राजीव, चुनाव लोकसभा और राजनीति ज्ञान गंगा, दिल्ली 2000, पृ. 350
13. पाटनी, सुशिला, वीमैन पॉलिटिकल एलीट सर्च आइडेन्टिटी, जयपुर, प्रिन्टवैल, 1994, पृ. 101
14. http//:www.rajassembly.nic.in

Corresponding Author

Vinod Kumar Garg*

Research Scholar, Department of Political Science, Maharaja Surajmal Brij University, Bharatpur, Rajasthan